इकाई 3 संसाधन सम्पन्नता और सामाजिक एवं आर्थिक संरचनाओं पर उसका प्रभाव – II

इकाई की रूपरेखा

3.1 प्रस्तावना

3.2 श्रम और भूमि

3.3 मैक्सिको में भूमि और भारतीय समुदाय

3.4 बागान अर्थव्यवस्थाः क्यूबा और गुयाना/त्रिनिडाड

3.4.1 क्यूबा

3.4.2 गुयाना और त्रिनिडाड

3.5 सारांश

3.6 अभ्यास प्रश्न

3.1 प्रस्तावना

जैसे ही क्रिस्टोफर कोलम्बस ने 1492 में नई भूमि खोजने की सूचना दी स्पेनी ताज ने वहाँ स्थापित होने और हिस्पैनियोला और क्यूबा - जहाँ कोलम्बस ठहरा हुआ था वहाँ पर तथा पाई जाने वाली अन्य भूमि पर भी शासन करने का दावा किया। पृथ्वी पर भगवान के मुख्य प्रतिनिधि के रूप में पोप एलैक्जेंडर ने भी शाही दावे की पुष्टि कर दी। 1494 की टोरडसिल्स की संधि के अनुसार स्पेन और पुर्तगाल आगे पाई जाने वाली भूमि के विभाजन के लिए सहमत हो गए। सन् 1700 तक स्पेन की शासन व्यवस्था उत्तर में सेंन फ्रांसिस्को और टेक्सास तक थी जो दक्षिणी अमेरिकी महाद्वीप के किनारे तक फैली हुई थी। अमेरिका - लॉस इंडियाज (भारत) जैसा कि स्पेनी कहते हैं, उनका साम्राज्य वास्तव में विशाल था जो उत्तर से दक्षिण करीब 9000 मील तक फैला हुआ था। इतने विशाल क्षेत्रों के संचालन के लिए स्पेन ने 1835 में दो वायसरायों की नियुक्ति की। न्यू स्पेन के वायसराय का शासन आज के मैक्सिको शहर में स्थित था जिसमें आज का संपूर्ण मैक्सिको, कैलिफोर्निया के दक्षिणी राज्य, एरिजोना, न्यू मैक्सिको, टेक्सास तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में फ्लोरिडा का महत्वपूर्ण हिस्सा, संपूर्ण मध्य अमेरिका तथा कैरिबियन का स्पेनी महाद्वीप शामिल था। लीमा में पहला वायसराय 1544 में आया और उसके शासन क्षेत्र में उत्तर में पनामा से लेकर दक्षिण में टियरा डेल फ्यूएगो का सब कुछ शामिल था। लेकिन निःसंदेह इसमें पुर्तगाली अमेरिका शामिल नहीं था। 1700 में न्यू ग्रांडा (मौटे तौर पर आज का कोलम्बिया) वायसराय का अधिकार क्षेत्र बना तथा 1739 में रायो डी. ला. पलेटा (मौटे तौर पर आधुनिक अर्जेन्टीना) वायसराय का चौथा अधिकार क्षेत्र बना। वायसरायों की सहायता करने और दूरस्थ क्षेत्रों में उनके अधिकारों को लागू करने के लिए स्पेनी ताज ने 'ओडियसियस' (परिषदों) की भी स्थापना की और 1570 तक ऐसी 10 परिषदें वायसराय के स्थान से दूर क्षेत्रों में वास्तविक प्रशासनिक अधिकारों का प्रयोग कर रही थी। प्रशासन पदानुक्रम में परिषदों से नीचे स्थानीय गवर्नर व्यापक दूरस्थ क्षेत्रों, या नगरों या गाँवों में प्रशासन कार्य करते थे।

3.2 श्रम और भूमि

विभिन्न सरकारी/शाही अधिकारियों के कार्य सरकारी नियमों को लागू करना, शुल्क संग्रह करना तथा

ताज को रिपोर्ट भेजना था। पुर्तगालियों ने भी लगभग ऐसी प्रणाली बहीया में स्थापित की और अठाहरवीं शताब्दी के मध्य में शाही अधिकारी का स्थान रायो डी. जेनेरियो मे स्थानान्तरित कर दिया। संपूर्ण प्रशासन व्यवस्था अति नौकरशाही युक्त एवं केन्द्रीकृत थी जो स्पेन और पुर्तगाल में ताज के लिए यथासंभव अधिक धन खींचने के लिए लगाई गई थी। चांदी और अन्य बहुमूल्य धातुओं की उपलब्धि ने स्पेनवासियों को दूर तक आकर्षित किया और जहाँ चांदी और बहुमूल्य धातुएँ पाई गई वहाँ दूर-दूर तक खनन नगरों की स्थापना की। मैक्सिको और बोलिविया की पहाड़ियों पर चांदी विशेष रूप से अत्यधिक थी और लाल एवं नीला रंग, चाकलेट की फलियाँ, खाल, चीनी और कुछ मसाले भारी मात्रा में स्पेन निर्यात किए जाते थे। पुर्तगालियों ने एक लकड़ी प्राप्त की जो लाल रंग प्रदान करती थी बाद में पुर्तगाली अमेरिका ने चीनी, सोने और हीरे, चाकलेट एवं चावलों के क्रय से काफी धन कमाया।

इन संसाधनों का दोहन करने के लिए उपनिवेशी प्रशासकों को श्रमिकों की आवश्यकता थी। देशी भारतीय श्रमिकों की बहुतायत थी और चूँकि दोनों सरकारी अधिकारियों और धार्मिक विचारकों ने भारतीयों को यूरोपवासियों से हीन घोषित कर रखा था अतः विजित को विजेताओं के लिए सेवा करनी चाहिए के विचार को व्यापक स्वीकृति मिली। भारतीय श्रमिक विशेषतः न्यू स्पेन और लीमा के वायसराय क्षेत्र में महत्वपूर्ण संसाधन था वहाँ पर भारतीय श्रमिकों के शोषण की व्यवस्था की गई, भारतीयों को विशेष गाँवों तक सीमित रखा जाता था और उनका श्रम स्पेनी अधिकारियों और विजेताओं के प्रयोग के लिए इस्तेमाल किया जाता था। लाखों लोगों को अपने गाँवों से उजाड़ कर मैक्सिको और पेरू में दूरस्थ खदानों में कार्य करने के लिए भेजा गया था। भारतीयों को अपनी भूमि और जन संसाधनों से वंचित किया गया जिसे स्पेनवासियों ने हथिया लिया था। उन्हें अपरिचित फसले उगाने के लिए विवश किया गया जो उनके विकसित स्वदेशी जल सिंचाई के साधनों के लिए उपयुक्त नहीं थी। स्पेनवासियों ने जनसंख्या वाले क्षेत्रों में पशुधन की भी खेती आरम्भ की। भारतीयों का अत्यधिक तथा अकुशल ढंग से शोषण किया गया जिससे महामारी फुट पड़ी और इससे भारतीय जनसंख्या में काफी कमी आ गई। 1519 में न्यू स्पेन में 2 से 2.8 करोड़ भारतीय थे जो 1605 के आसपास केवल 1.075 करोड़ रह गए। कैरिबियन में भारतीयों की संख्या 1492 में लगभग 3,00,000 थी यहाँ इसमें विशेष रूप से कमी आई।

जनसंख्या में महामारी के बावजूद मैक्सिको और पेरू में अब भी भारतीयों की काफी संख्या थी। लेकिन जहाँ पर संख्या अत्यधिक कम हो रही थी या जहाँ पर अत्यधिक नष्ट हो गई थी जैसा कि कैरिबियन में वहाँ दास प्रथा आरंभ हो गई थी। इससे पता लगता है कि कैसे अफ्रीकी दास लैटिन अमेरिका में आए। पुर्तगाल पहला यूरोपीय देश था जिसने सोलहवीं शताब्दी के आरंभ में अफ्रीका के पश्चिमी तट पर दास छापा मारा। 1454 के पपलबुल ने गुयाना के सभी तटों सहित केंस बोजन्डोर एवं नील के दक्षिण की तरफ पुर्तगालियों को सेरेसेन्स, पेगेन्स और ईसा के अन्य दुश्मनों पर आक्रमण करने, उन्हें अधीन बनाने तथा उनकी संख्या कम करके स्थाई दासत्व के लिए विवश करने की अनुमति प्रदान की। शीघ्र अन्य यूरोपीय देश पुर्तगाल के साथ मिल गए। विशेषतः अठाहरवीं और उन्नीसवीं शताब्दियों में कैरिबियन महाद्वीप में अत्यधिक दास बनाए गए क्योंकि चीनी बागान अर्थव्यवस्था विकसित हो गई। अब यह तथ्य ध्यान देने वाला है कि श्रम के दोनों स्त्रोतों अर्थात् भारतीय और अफ्रीकी को गौरों से हीन माना जाता था। कम से कम भारतीयों के मामले में एक अंतर था कि उन्हें ताज के अधीन माना जाता था और शाही आदेश था कि भारतीयों को दास न बनाया जाए तो भी आरंभ में भारतीयों को भी दास बनाया गया था। ऐसा अनुमान है कि एटलांटिक दास व्यापार की संपूर्ण अवधि कहना चाहिए कि 1451 से 1870 तक लगभग 1 करोड़ दास एटलांटिक से निर्यात किए गए। इसमें से स्पेनी अमेरिका में करीब 16 लाख, ब्राज़ील में 36 लाख, ब्रिटेन उपनिवेशों और पूर्व उपनिवेशों में

करीब 20 लाख और फ्रांस कैरिबियन में करीब 16 लाख दास पहुँचे। यह भी ध्यान देने योग्य है कि यूरोप में चीनी और अन्य उष्णकटिबंधीय फसलों की माँग बढ़ने पर दास व्यापार सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में अपने चरम पर पहुँच गया था। यहाँ पर यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि दासों और भारतीय श्रमिकों की पर्याप्त एवं सस्ती आपूर्ति के बावजूद भूमि और खदान मालिक कभी भी बागानों एवं खदानों पर नई एवं दक्ष तकनीक स्थापित करने एवं प्रबंधन में सुधार करने के इच्छुक नहीं थे। परिणामस्वरूप संपूर्ण दास सम्प्रदाय नष्ट होता रहा और अत्यंत कठोर एवं दयनीय कार्य परिस्थितियों में कार्य करता रहा। सोलहवीं शताब्दी में लाखों भारतीयों को मारने के पश्चात् औपनिवेशिक व्यवस्था ने 17वीं शताब्दी से आगे लाखों दासों को लील लिया। दासता एक सार्वभौमिक, प्रतियोगी एवं लाभदायक व्यवसाय था। ग्रेट ब्रिटेन और व्यावहारिक रूप से प्रत्येक यूरोपीय देश इस व्यवसाय में शामिल था। एक दास का मूल्य एक पशु से मात्र दो गुणा था और दास व्यापारी और दास आधारित बागवानी ब्राज़ील और कैरिबियन में अत्यधिक लाभ अर्जित कर रही थी। लेकिन ग्रेट ब्रिटेन में सचल दासता संपत्ति में सर्वाधिक आय अर्जित की तथा उसके कैरिबियन बागवानी में लाभदायक दास पैदा किए जाते थे।

मैक्सिको और पेरू में भूमि एवं श्रमिक पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध थे। स्पेनी ताज द्वारा विजेताओं और बाद में अधिवासियों को पर्याप्त भूमि एवं खदानें प्रदान की गई थी। भूमि पर कार्य कराने के लिए बेगार प्रथा लागू की गई। विजेताओं को ताज द्वारा विश्वासपात्र का पुरस्कार दिया जाता था इसका अभिप्राय यह है कि उसे विश्वासपात्र भारतीयों से वस्तुएँ, धन और सर्वाधिक महत्वपूर्ण श्रमिकों को नजराने के रूप में लेने का अधिकार मिल जाता था। मैक्सिको के विजेता हर्नव कोर्ट्स को 23,000 करदाताओं से नजराना वसूल करने का सरकारी अधिकार था जो वास्तव में इससे कई हजार अधिक थे। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि स्पेनी ताज विजेताओं को विश्वासपात्र से अलग भी भूमि का पुरस्कार प्रदान करता था और उन दोनों में कोई कानूनी संबद्धता नहीं थी। इस नीति के पीछे उद्देश्य यह था कि कोई सामन्तवादी वर्ग न उत्पन्न हो जाए जो ताज के अधिकारों को चुनौती दे सके। स्वयं ताज को भी खदानों और सार्वजनिक कार्यों के लिए भारतीय श्रमिकों की आवश्यकता थी। इसके लिए विभाजन की प्रणाली अपनाई गई। स्पेनी अधिकारियों को सार्वजनिक कार्य के कार्यक्रम भारतीयों को सौंपने का अधिकार था जो निजी भू-जागीरों और खदानों पर भी कार्य करते थे। जब एक बार यह ज्ञात हो गया कि भारतीय अत्यधिक कार्यभार से मर रहे हैं और उनके समुदाय एवं रोज़गार समाप्त हो रहे हैं तो स्पेनी ताज ने सुधार के रूप में एक नया अधिकारी वर्ग बना दिया। यह सुधार शोषण के विरुद्ध भारतीयों की सुरक्षा के लिए था परन्तु इसने भारतीयों को महंगी वस्तुएँ बेचने और उनसे सस्ती वस्तुएँ खरीदने के द्वारा उनके शोषण को और भी अधिक बढ़ा दिया। भौगोलिक दूरी होने के कारण ताज के आदेशों का उल्लंघन अधिक होता था। इसके अतिरिक्त स्पेनी अधिकारी बड़े-बड़े शहरों एवं विकसित केन्द्रों तक सीमित थे। गाँवों में तो जागीरदार का ही कानून चलता था।

भूमि और श्रम के ऐसे उपयोग से शीघ्र ही एक नए आर्थिक विशिष्ट वर्ग की उत्पत्ति हुई। ये स्पेनी पूर्वजों का अमेरिका में उत्पन्न वर्ग था जिसे '***क्रीयोलोस*** कहा जाता था जिन्हें भूमि और खदानों के क्रय में छूट मिलती थी। उनके साथ आप्रवासी यूरोपीय व्यापारी भी मिल गए और मिलकर एक शक्तिशाली आर्थिक एवं सामाजिक रूप से विशिष्ट वर्ग बन गया। ताज के निर्देशानुसार भारतीयों ने अपनी अधिकांश भूमि अपने पास रखी लेकिन वास्तव में अधिकतर लोगों को अपनी भूमि से हाथ धोना पड़ा और सेवक, जागीरदारों के ऋणग्रस्त बंधुआ दास बन गए।

सत्रहवीं शताब्दी तक अधिकांश भारतीय भूमि बड़ी जागीर में समा गई; या भारतीयों ने 'सेवक' के रूप में शक्तिशाली जागीरदारों का संरक्षण पाने के लिए अपनी भूमि का परित्याग कर दिया। अधिकांश भारतीय गाँव बंधुआ श्रमिकों के आरक्षित हो गए जो बड़ी-बड़ी जागीरों के लिए कार्य करते थे। इस

प्रकार एक सामंतवादी विशिष्ट लैटिन-अमेरिकी संस्था जिसे *हेसियंडा* कहा जाता है का उदय हुआ जो भारतीय सेवक प्रथा या पीढ़ी-दर-पीढ़ी ऋणग्रस्त बंधुआ मज़दूर के समान थी। इससे अधिक पेरू में जहाँ औपनिवेशिक अधिकारियों का नियंत्रण लगभग आरंभ से ही कमजोर था वहाँ विजेता भूमि के स्वामित्व को भारतीय श्रमिक के साथ संबद्ध कर लेते थे। इस प्रकार ताज लैटिन अमेरिका में सामंतवादी अभिजात्य वर्ग की उत्पत्ति को नहीं रोक सका।

अठारहवीं शताब्दी में स्पेन के बौबोर्न राजाओं ने ताज के अधिकारों को मज़बूत करने का प्रयास किया और स्पेनी अमेरिका में उत्पादन और व्यापार को प्रोत्साहित किया। उन्होंने कुछ परिवर्तन किए जैसे स्पेनी वायसराय के क्षेत्र और लीमा के मध्य व्यापार की अनुमति प्रदान की। आंशिक रूप से भारतीय आबादी पुनः बढ़ने से और औद्योगिकरण होते यूरोप से उत्पादों एवं धातुओं की माँगों में वृद्धि होने से कृषि उत्पादों, धातु और खनिजों के उत्पादन एवं व्यापार में वृद्धि हुई। इससे स्वाभाविक रूप से केरियोलो जागीरदारों, व्यापारियों एवं खदान मालिकों को अपेक्षाकृत अधिक लाभ हुआ जो शताब्दी के अंत में मुक्त व्यापार और राजनीतिक स्वतंत्रता के नए यूरोपीय विचारों को भी अपनाने लगे थे। जैसा कि आप जानते हैं कि मैक्सिको को छोड़कर लैटिन अमेरिका में स्वतंत्रता की लड़ाइयाँ संरक्षणवादी घटनाएँ थी जिनका नेतृत्व केरियोलो - विशिष्ट वर्ग ने किया था जो यह मानता था कि मुक्त व्यापार से वे ताज के नियंत्रण से मुक्त हो जाएँगे और इससे उनका मुनाफा बढ़ जाएगा। केवल अमेरिका में जब भारतीयों ने आजादी और भूमि की माँग के लिए विद्रोह किया तो स्वतंत्रता की माँग में अधिक सामाजिक व्यवस्था की माँग भी जोड़ी गई।

स्वतंत्रता से मुक्त व्यापार प्रणाली की स्थापना हुई। महाद्वीप कई गणतंत्रों में विभाजित हो गया जिनपर रूढ़िवादी जागीरदारों और व्यापारियों का नियंत्रण था और जिनके अधिकारों को चर्च द्वारा वैध करार दिया जाता था। परस्पर मामूली सम्बंधों के साथ स्वतंत्र गणराज्य सार्वभौमिक व्यापार सम्बंध से जुड़े हुए थे जिनका नेतृत्व ब्रिटेन कर रहा था। उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश व्यापार एवं निवेश संपूर्ण स्पेनी अमेरिका में अत्यधिक बढ़ गया था और कट्टरवादी विशिष्ट वर्ग ब्रिटेन के वाणिज्यिक हितों के बाद दूसरे स्थान पर आने से बहुत खुश थे। यह जानना महत्वपूर्ण है कि मुक्त व्यापार के उदार विचार प्रभावी होने से भारतीयों का शोषण और जोर पकड़ गया तथा उनकी भूमियों का थोक में हक समाप्त किया जाने लगा। भूमियाँ हेसियांडो के दावों में एकत्रित होने लगी जो उन्नीसवीं शताब्दी की अर्थव्यवस्था एवं समाज की मैक्सिको और सब जगह की विशेषता बन चुकी थी।

3.3 मैक्सिको में भूमि और भारतीय समुदाय

आइए हम विशेष रूप से मैक्सिको के संदर्भ में भूमि और श्रमिक विषयों के बारे में विचार करें। स्वतंत्रता के बाद भूमि केन्द्रीकरण विशेष रूप से प्रबल हो गया था। वास्तव में स्वतंत्रता से काफी समय पूर्व ग्रामीण मैक्सिको का प्रभुत्व हेसियांडो के हाथों में था। भू-स्वामित्व के इस स्वरूप विशेष की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ इस प्रकार हैं: (i) बड़ी-बड़ी भूमियाँ एक ही स्वामी के अधीन थी कुछ बड़ी खदानें एवं भूमियाँ कभी भी हजार हेक्टर से कम नहीं होती थी और कुछ तो कई सौ हजार तक पहुँच गई थी। (ii) अपेक्षाकृत आत्म निर्भरता थी। हेशियांडों में उगने वाली फसल सभी भोजन आवश्यकताएँ पूरी करती थी और कृषि कार्यों के लिए वहाँ सभी प्रकार के औजार, भवन-निर्माण सामग्री तथा अन्य साधन बनाने के भी प्रयास किए जाते थे। (iii) हेसियांडों में हमेशा स्थायी आवासीय श्रमिक बल रहता था। उन्नीसवीं शताब्दी में हेसियांडों और सेवक के बीच ऋणी बंधुआ श्रमिक का सम्बंध बढ़ता जा रहा था। हेसियांडों के भण्डारों द्वारा प्रायः दिया जाता था जिसे टियांडा डी-राया कहा जाता था, स्पष्टतः ऋणी कृषक को बाँधने के इस उद्देश्य से दिया जाता था कि आवश्यकतानुसार उसका श्रम कार्य के लिए उपलब्ध रहेगा। ऋण बंधुआ श्रम उत्तर में अधिक प्रचलित था जहाँ श्रमिक मध्य मैक्सिको की तुलना

में काफी कम थे और भारतीय श्रमिक अत्यधिक संख्या में थे। कुछ क्षेत्रों में हिस्सेदारी में फसल उगाने की व्यवस्था विकसित हो गई थी। फिर भी अन्य भागों में जैसे युकरान में हेनक्वीन (सन जैसे रेशे) की बागवानी, वैली नेसियोनल में तम्बाकू उत्पादन में और चियपास में कॉफी उत्पादन में उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक बेगार भी तैनात की जाती थी। चाहे स्वरूप कोई भी हो परिणाम हमेशा अत्यधिक सस्ती और स्थाई श्रमिक आपूर्ति वाला होता था। जो मौसमी कार्य के लिए और कम मज़दूरी पर दिया जाता था। (iv) अधिकतर हेसियांडे मालिक अनुपस्थित रहते थे और मैक्सिको शहर या यूरोप में रहते थे। (v) अधिकतर हेसियांडों का प्रबंधन ठीक नहीं था और उत्पादन कम होता था लेकिन मालिकों की आमदनी निश्चित थी। वे अर्ध-सामंत थे और कभी-कभी सट्टेबाज प्रकार के अर्ध पूंजीवादी थे। प्रायः कहा जाता था कि हेसियांड कोई व्यापार नहीं है। भूमि सामाजिक हैसियत के लिए रखी जाती थी। भूमि पर कार्य करने वालों को भूमि देने से मना कर दिया जाता था और हैसियत के राजनीतिक नियंत्रण और आधिपत्य रखा जाना था। (vi) हेसियांडों का अर्ध-सामंती रूप, अनुपस्थित स्वामित्व, स्थाई तथा अल्प देय मज़दूरी तथा श्रमिकों की बहुतायत इन सबका अर्थ था कि हेसियांडों में निवेश और नई तकनीकों का अभाव है। यह देखना आश्चर्यजनक है कि भूमि और खदानों पर कभी-कभी प्राचीन कोलम्बस पूर्व पद्धतियों और साधनों का प्रयोग जारी था।

उन्नीसवीं शताब्दी में मैक्सिको में हेसियांडा के अतिरिक्त भू-स्वामित्व के दो अन्य रूप भी थेः रैन्को एवं भारतीय पंचायती गाँव। एक औसतन रैन्को करीब एक सौ हैक्टर का होता था और उस पर स्वामी एवं उसका परिवार तथा कभी-कभी फसल के सांझीदार एवं किराये के श्रमिक भी कार्य करते थे। इसकी तुलना में भारतीय पंचायती भूमिपति (इजिडोस) जो पहले विजित थे और किसी तरह बच गए थे लेकिन उनकी संख्या काफी कम थी। विजेताओं और उनकी संतानों ने अधिकांश उपजाऊ भूमि पर नियंत्रण कर रखा था और भारतीयों के पास इकोमियंडा (बंजर भूमि) भूमि थी। तो भी किसी तरह कुछ भारतीय संप्रदायों ने अपने गाँवों से लगी कुछ भूमि पर अधिकार जमा लिया था। स्पेनी ताज ने अधिकार दिया कि प्रत्येक भारतीय गाँव अपने पर्याप्त गुजारे के लिए भूमि पर नियंत्रण रख सकता है। न्यूनतम आवश्यकता में एक नगर स्थल और एक रजिडो (पंचायती कृषि क्षेत्र) शामिल था जो विभिन्न आकार के होते थे लेकिन हमेशा कम ये कम एक वर्ग लीग (करीब 3 वर्ग मील) भूमि से घिरे हुए होते थे। एजिडो में गाँव की कृषि भूमि, जंगल भूमि तथा चरागाह शामिल थी। ये सभी भूमियाँ अहस्तांतरणीय होती थी और इन पर नगर परिषद का नियंत्रण होता था। इन भारतीय समुदायों और उनके अधिकार की भूमियों ने उन्नीसवीं शताब्दी में मैक्सिको की कृषि व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण घटक की संरचना की। ये गाँव आश्चर्य जनक रूप से हेसियांडों से अधिक आत्मनिर्भर थे, ओर कमोबेश बाजारू अर्थव्यवस्था से अलग रहते थे। यहाँ पर यह तथ्य ध्यान देने लायक है कि निर्यात फसल उगाने वाले बड़े बागान तथा शहरों की कृषि आवश्यकताएँ पूरी करने वाले हेसियांड ही घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय व्यावसायिक अर्थव्यवस्था में भाग लेते थे।

उन्नीसवीं शताब्दी में मुक्त व्यापार के उदारवादी विचारों की जीत हुई थी और कृषि क्षेत्र में बाजार तंत्र की स्थापना हुई। मैक्सिको कैसे एक आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था बना और इसकी आबादी वैयक्तिक रूप से उद्यमशील और लाभ उद्देश्य से कैसे संचालित हुई? ये उदारवादी विचार एवं लक्ष्य भारतीयों के लिए नए संकट बन गए। अन्य लोगों के साथ एक नस्लीय श्रेणी के रूप में उन्हें भी मैक्सिको के आधुनिकीकरण के लिए बाधा माना जाने लगा। उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में यह सुझाव एवं स्वीकार्य नीति बनाई गई कि उन्हें या तो मिश्रित किया जाए या संभव हो तो उन्हें भौतिक रूप से नष्ट किया जाए तथा यूरोपीय आप्रवासियों के माध्यम से देश को गौरों का देश बनाया जाए। भारतीय सामुदायिक खेती को अर्थव्यवस्था के पिछड़ने का मूल कारण माना गया। सुझाव दिया गया कि इन कृषि क्षेत्रों को भंग कर मैक्सिको को वैयक्तिक पूंजीवादी किसानों के वर्ग में परिवर्तित किया

जाए। उदार विचारों एवं नीतियों ने हेसियांडों और भारतीय गाँवों के बीच बना वह क्षीण संतुलन समाप्त कर दिया। 1855-57 के सुधार नियमों से आरंभ कर 1910 में पोरफिरीओ डायज़ की तानाशाही को समाप्त करने तक भूमि स्वामित्व में व्यापक परिवर्तन किए गए। इन परिवर्तनों का कुल परिणाम यह निकला कि भूमि फिर हेसियांडों के हाथों में सकेन्द्रीत हो गई। किसी के लिए कैथोलिक चर्च शायद कुल राष्ट्रीय धन के दो/पाँचवें हिस्से का मालिक था और वह रूढ़िवादी विशिष्ट वर्ग का वित्तीय एवं आध्यात्मिक सलाहकार था उसे 1857 के कानूनों द्वारा भूस्वामी होने के अधिकार से वंचित कर दिया गया। चर्च की संपत्तियाँ राज्य द्वारा अधिग्रहण करने से बड़े निजी हेसियांडों की मुख्य संपत्ति बन गई। इससे भी अधिक भारतीयों की सामुदायिक भूमि भी रद्द कर अधिग्रहीत कर ली गई। 1856 के प्रसिद्ध लेयरडो कानून के अंतर्गत सिविल एवं आध्यात्मिक परिषदों को भू-सम्पत्ति रखने के स्वामित्व से वंचित कर दिया गया और कानून की इस प्रकार व्याख्या की गई कि संपूर्ण भारतीय सामुदायिक भूमि गाँव के सदस्यों को अलग-अलग प्रदान की जाएगी। जैसा कि पहले भी कहा जा चुका है कि उदारवादियों को भारतीयों में से अकेले अकेले पूंजीवादी किसानों के एक वर्ग का उदय होने की आशा थी। कोई भारतीय या ग्रामीण मध्य वर्ग कभी उत्पन्न नहीं हुआ। केवल हेसियांडपतियों ने ही भारतीयों की भूमि विभाजित करने से अपना स्वामित्व बढ़ाने और सकेन्द्रीत करने का लाभ उठाया। तानाशाह पोरफिरियों डायज़ (1867-1910) ने विशेष रूप से इन नियमों को काफी सख्ती से लागू किया। ऐसा अनुमान है कि उसने अपने काल में 20 लाख एकड़ से अधिक सामुदायिक भूमि अलग-अलग लोगों को आवंटित की और वास्तव में इसका अंत भू-पतियों और उन कम्पनियों में सिमट गया जिनमें से अधिकतर के स्वामी अमेरिकी थे। पोरफिरियों डायज़ ने भी सार्वजनिक भूमि के सर्वेक्षण, उप-विभाजन और व्यवस्था की एक प्रणाली आरंभ की। 1890 के दशक तक मैक्सिको की संपूर्ण भूमि का 20 प्रतिशत हिस्सा भूमि सर्वेक्षण कम्पनियों के हाथ में जा चुका था। बाजा कैलिफोर्निया में एक व्यक्ति होसियांडा का स्वामी था जो 1.2 करोड़ एकड़ भूमि में फैला हुआ था। नकदी फसलें जैसे चीनी और कपास को निर्यात का विस्तार करने के कारण, भारतीय सामुदायिक भूमि का अधिग्रहण होने लगा। भूमि कम्पनियों के साथ मिलकर हेसियांडपति 1910 की क्रान्ति के समय आधी से अधिक राष्ट्रीय भूमि के स्वामी बन चुके थे।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत में मैक्सिको में भूमि अधिकार प्रणाली में व्यापक परिवर्तन हुए। मैक्सिको के संपूर्ण क्षेत्र का करीब 20 प्रतिशत क्षेत्र निजी हाथों में था। लगभग सभी सामुदायिक भूमि बड़े भू-स्वामियों द्वारा नष्ट, विभाजित या हड़पी जा चुकी थी। 1910 तक लगभग 90 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों के पास कोई भूमि नहीं थी और उनमें से अधिकार हेसियांड के पास ऋणी बंधुआ प्रणाली के माध्यम से बद्ध थे। संभवतः केवल 15 प्रतिशत जीवित सामुदायिक गाँवों के पास थोड़ी सी भूमि थी। अतीत में उतने अधिक मैक्सिनवासी भूमि विहीन नहीं थे जितने कि 1910 की क्रान्ति के समय थे। उस समय कोई ग्रामीण मध्य वर्ग नहीं था। कृषि व्यवस्था के मध्य पशु फार्म आए जिनकी संख्या पचास हजार से भी कम थी और अधिकांशतः जीवित रखने भर लायक थे।

कुछ हाथों में भूमि का संकेन्द्रीयकरण कभी भी आधुनिकीकरण के माध्यम से उत्पादन बढ़ाने के लिए इच्छुक नहीं रहा। रेशे/कच्चे माल का उत्पादन विशेष रूप से गिर गया तथा क्रान्ति के दिन वास्तव में बहुत से निर्धन किसान भूख से मरने के कगार पर थे। 1910 की क्रान्ति के द्वारा भूमि पुनः वितरण तथा भारतीयों के साथ व्यवहार का मामला अंत में मैक्सिको की राजनीति में केन्द्रीय स्तर पर आ गया। प्रसिद्ध किसान क्रान्तिकारी एमिलियनों जापटा के नेतृत्व में भारतीयों ने क्रान्ति कर भूमि और स्वाधीनता की माँग की। भारी मात्रा में सशस्त्र किसानों की सक्रियता व विवशता के कारण 1917 के संविधान में भूमि पुनः वितरण के पट्टे को शामिल करना पड़ा, राष्ट्रपति लैज़ासे कार्डेस (1934-40) ने लैटिन अमेरिका में एक व्यापक भूमि पुनर्वितरण कार्यक्रम आरंभ किया और उसने अपने शासन

काल में मैक्सिको के संपूर्ण क्षेत्र का 10 प्रतिशत से अधिक क्षेत्र का पुनर्वितरण कर दिया। उसके अधीन वैयक्तिक नाम और विषय दोनों के नाम से हुए भूमि पुनर्वितरण ने इजीड़ों का रूप ग्रहण कर लिया। भूमि रखने की इजोड़ी व्यवस्था के अंतर्गत भूमि व्यक्ति की अपेक्षा गाँव को प्रदान की जाती थी। चरागाह और जंगल भूमि प्रायः सांझे में रहती थी। जबकि खेती की भूमि पर अधिकांशतः अलग-अलग व्यक्ति कार्य करते थे। कुछ इजांड़ों ने सामूहिक रूप भी ग्रहण कर लिया था तथा कुछ में कृषि भूमि में सहकारी खेती का रूप था। 1940 के बाद भी छोटे-मोटे स्तर पर भूमि का पुनर्वितरण होता रहा। मैक्सिको में भूमिहीनता, वास्तविक हकदारों को भूमि का वास्तविक अधिकार देना तथा कृषि और ग्रामीण आधारभूत विकास की समस्याओं का कभी भी समाधान नहीं हुआ।

1940 के बाद कृषि आधुनिकीकरण की अधिकता विपरीत प्रवृत्ति आरंभ हुई और भूमि का वास्तविक पुनर्संकेन्द्रीकरण होने लगा। 1991 में भूमि पुनर्वितरण की धारा हटाने और विद्यमान सरकारी तंत्र की सहायता समाप्त करने के बाद भूमि का नया संकेन्द्रीकरण हुआ और विदेशी स्वामित्व के औद्योगिक क्षेत्रों की वृद्धि उन्नीसवीं शताब्दी के स्वरूप की याद दिलाती है। उन लैटिन अमेरिकी देशो में जिनमें अतीत में कभी सही भूमि पुनर्वितरण कार्यक्रम लागू नहीं हुआ उनमें विस्तृत होते बड़े स्वामियों के अधीन जीवनोपर्जान खेती जीवित रहने का संघर्ष करने वाली कमोबेश वहीं स्थिति रही। इनमें कोई संदेह नहीं कि लैटिन अमेरिका में भू-स्वामित्व का यही स्वरूप आर्थिक असमानता और असमान धन वितरण, वंशानुगत सामाजिक क्रम, और आश्रित एवं ग्राहकता की राजनीतिक संस्कृति के मूल में था।

3.4 बागान अर्थव्यवस्थाः क्यूबा और गुयाना/त्रिनिडाड

3.4.1 क्यूबा

कोलम्बस ने 1492 में अपने प्रथम अभियान में क्यूबा में पड़ाव किया। तब से यह मैक्सिको, मध्यवर्ती अमेरिका और दक्षिण अमेरिका के हिस्सों को भी विजित करने के अभियानों का मुख्य/केन्द्रीय स्थान बन गया। खनिज संपदा की कमी या बड़ी स्वदेशी श्रमिक फौज के अभाव में क्यूबा में स्थापित होने की सुविधा नहीं थी। खोज के समय लगभग 50 हजार भारतीय स्पेनी *इनकोमियंडा* व्यवस्था में नष्ट हो गए जिनकी संस्कृति की पीछे कोई निशानी नहीं थी। दो सौ वर्षों से अधिक समय में क्यूबा की छोटी सी आबादी को स्पेनी फौजों को सेवाएँ प्रदान के लिए अनुकूल बनाया जा रहा था। उसके पास मज़बूत सामुदायिक आधारभूति साधनों की आवश्यकता थी। उसकी भौगोलिक स्थिति और संसाधन संपदा ने अपनी समृद्धि के लिए विदेशी व्यापार पर आश्रित करना पड़ता था। औपनिवेशिक प्रशासन और संस्थाएँ मैक्सिको या पेरू की तुलना में कमज़ोर थे। कैथोलिक चर्च का महाद्वीप के विश्वास और संपदा पर पूरा नियंत्रण था। समग्रतः सत्रहवीं शताब्दी के अंत तक देश वास्तव में अरूद्ध रहने, समुद्री डाकुओं से त्रस्त रहा, तूफानों से उजड़ता रहा, रोगों से पीड़ित रहा तथा मैक्सिको और पेरु के आकर्षण के कारण जनसंख्या कम होती रही।

क्यूबा का महत्व केवल अठाहरवीं शताब्दी के मध्य में ही बदलना आरंभ हुआ जब चीनी बागवानी का विकास हुआ और शक्तिशाली एवं संबद्ध बागवानी वर्ग का उदय हुआ जिसे सुकरोक्रेशिया कहा जाता है। बागवानी अर्थव्यवस्था की प्रगति का समय बहुत महत्वपूर्ण था। यह इंग्लैण्ड में उस औद्योगिक क्रान्ति के समकालीन था जिसमें चीनी की शोधन प्रक्रिया में सुधार के लिए भाप इंजन का प्रयोग किया गया। इसकी भौगोलिक स्थिति संयुक्त राज्य अमेरिका और एटलांटिक पार व्यापारिक मार्गों के लिए उपयुक्त थी और जलवायु स्थिति बागवानी अर्थव्यवस्था के उदय के लिए एकदम उपयुक्त थी। उत्पादन के अन्य तथ्य जैसे श्रमिक अफ्रीकी दासों के रूप में मिल गए थे। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक दास प्रथा समाप्त होने तक करीब 3,75,000 अश्वेत दासों को क्यूबा लाया जा चुका था। विदेशी

निवेश, आधुनिक तकनीक की शीघ्र स्थापना तथा कुशल प्रबंध ने क्यूबा को विश्व में चीनी का प्याला बना दिया। ब्रिटिश नौवहन की प्रगति और अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में ब्रिटेन की एकाधिकार स्थिति ने क्यूबा की चीनी संपदा के महत्व को और भी बढ़ा दिया।

उदारवादी अर्थशास्त्रियों के अनुसार क्यूबा को चीनी में तुलनात्मक लाभ बना रहेगा तथा अगले 250 वर्षों तक चीनी इसकी अर्थव्यवस्था, समाज और इसकी राज्यतंत्र का निर्णायक रहेगी। क्यूबा के अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रवेश के बारे में जानना महत्वपूर्ण होगा। इसकी संपूर्ण अर्थव्यवस्था एवं समाज चीनी के उत्पादन, संसाधित करने और निर्यात करने में सक्रिय हो गए थे और इसके साथ देश के खाद्य पदार्थों से लेकर वस्त्र, मशीनें और अन्य पूंजीगत वस्तुओं तक की सभी आवश्यकताएँ आयात से पूरी होती हैं। चीनी, दासता और बागान अर्थव्यवस्था सबने मिलाकर औपनिवेशिक सामाजिक संरचना की। बागवानी वर्ग ने स्पेन में पैदा हुए (पैनिंसुलरों) से समझौता किया। यद्यपि पूर्वी क्षेत्र में क्यूबा मूल का एक छोटा कृषक वर्ग किरियोलोस कॉफी और तम्बाकू आदि की खेती करता था। जब स्पेनी अमेरिका में स्वतंत्रता युद्ध हुआ तो भी क्यूबा पूरी तरह स्पेनी अधिकार में रहा। कृषक समृद्ध हो रहे थे और आम जनता भी संतुष्ट थी। इसके अतिरिक्त कृषकों को भय था कि कोई भी स्वतंत्रता आन्दोलन दास विद्रोह पैदा कर सकता है जैसा कि पहले हैत्ती में हो चुका था। 1862-63 में हवाना को अंग्रेज़ों द्वारा हथियाने से मुक्त व्यापार के फायदों को और अधिक महसूस किया जाने लगा क्योंकि एक तो नए बाजार मिल गए थे और अर्थव्यवस्था अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार नेटवर्क से जुड़ गई थी। ग्रेट ब्रिटेन और अमेरिका की औद्योगिक शक्ति के बढ़ने से दोनों के दबाव में स्पेन ने पुनः व्यापार व्यवस्था को उदार बनाया इससे चीनी अर्थव्यवस्था में नया निवेश और नई तकनीक आयी।

अंत में 1868 में स्वतंत्रता युद्ध आरंभ हो गया जिसका नेतृत्व पूर्वी क्यूबा का स्वतंत्र, छोटा, श्वेत कृषक वर्ग कर रहा था लेकिन इसे कुचल दिया गया और अर्थव्यवस्था का चीनी रहित क्षेत्र उजड़ गया। अब पूर्वी क्षेत्र में भी चीनी बागवानी फैल गई थी और नया विदेशी निवेश और तकनीक महाद्वीप में लगाई गई। उन्नीवसीं शताब्दी के अंत तक विदेशी स्वामित्व वाले औद्योगिक समूह की स्पष्ट बाहुलता थी जिसमें अन्यों के साथ स्थानीय प्रबंध और भागीदारी के सीमित अवसर थे। विश्व में चीनी की बढ़ती माँग ने उत्पादकों को अपने विचारों की अर्थव्यवस्था के मानदंडों के अनुसार योजना बनाने के अवसर प्रदान किए और उद्योग को नए बाजारों मुख्यतः अमेरिकी बाजारों से बहुत लाभ हुआ। व्यापार, निवेश, तकनीक और औद्योगिक निवेश के लिए अमेरिका पर बढ़ती निर्भरता से 1880 और 1890 के दशकों में अमेरिका और क्यूबा के सम्बंध बहुत सुदृढ़ हो गए जबकि स्पेन अभी भी कहना चाहिए कि औपनिवेशिक देश ही बना रहा। 1896 में अमेरिका का क्यूबा में अनुमानित निवेश 5 करोड़ अमेरिकी डालर था जो मुख्यतः खनन और चीनी कम्पनियों में था। दोनों देशों के बीच 1887 में व्यापार 2.7 करोड़ अमेरिकी डालर का रहा और व्यापार का स्वरूप दर्शाता है कि अमेरिका से क्यूबा को निर्मित सामान तथा औद्योगिक वस्तुओं का निर्यात होता था तथा क्यूबा से अमेरिका में चीनी, शीरा, तम्बाकू और कुछ अन्य अनिर्मित उत्पादों का आयात होता था। दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि महाद्वीप चीनी निर्यात एवं उससे सम्बंधित उद्योग जैसे रेलवे, मालगोदाम, बन्दरगाह सुविधाएँ, और उनके वित्तीय एवं श्रमिक कार्य संरचनाओं के लिए पूरी तरह प्रत्यक्ष रूप से अमेरिकी बाजारों पर निर्भर था।

इस प्रकार उभरती विकसित पूंजीवादी औद्योगिक शक्ति से प्रभावित कमजोर अर्थव्यवस्था के बढ़ते प्रवेश ने क्यूबा में भिन्न राष्ट्रवाद का स्वरूप प्रदान किया। एक बार फिर स्वतंत्रता के लिए गठित ताकतें शक्ति संकलित कर रही थी। इस बार जोस मार्टी के नेतृत्व में नई एकता और राष्ट्रीय उद्देश्य की भावना और अधिक बाध्यकारी थी। जोस मार्टी ने आत्म निर्णय के आधार पर राजनीतिक स्वतंत्रता और राष्ट्रीयता के परिपक्व दृष्टिकोण को जोरदार ढंग से प्रस्तुत किया। उसने कट्टरता और लैटिन अमेरिकी स्वतंत्रता के लोकतंत्र विरोधी उस स्वरूप का अध्ययन किया था जहाँ स्वतंत्रता के 70 वर्ष

के बाद भी कानून और संस्थाएँ तथा परम्पराएँ उपनिवेशवादी थी। वर्ग रंग भेद के स्पष्ट समाज में जहाँ श्वेत चीनी अभिजात वर्ग अश्वेत और नीग्रो श्रमिकों पर आधिपत्य रखते थे वहाँ जोस मार्टी और उसके क्यूबा क्रान्तिकारी दल (क्यूबन रेव्यूलुशनरी पार्टी) ने क्यूबा की औपनिवेशिक स्थिति को समाप्त करने के लिए एक कार्यकम प्रस्तुत किया। इस संदर्भ में मार्टी ने एशिया और अफ्रीका में गैर-उपनिवेशी राष्ट्रीय आन्दोलन के उदय की पूर्व सूचना भी दी।

जोस मार्टीन स्वतंत्रता के उद्देश्य में शहीद हो गया था। क्यूबा अमेरिका के समुद्रीय व्यापारिक मार्ग का प्रयोग करता था और क्षेत्र में अपने प्रकट लक्ष्य का पीछा करता था। अमेरिका बढ़ती ताकत क्यूबा को अपने नियंत्रण से जाने नहीं देना चाहती थी। 1898 में अमरीकी सेना ने हस्तक्षेप किया राष्ट्रीय आन्दोलन को दबाया। स्पेनी उपनिवेश को क्यूबा से बाहर निकाला तथा 1902 तक प्यूरटो रिको और अमेरिकी सेना ने महाद्वीप पर अपना नियंत्रण बनाए रखा।

क्यूबा के लिए चीनी का अलग से महत्व है और यह फ्लोरिडा के तट पर 80 मील तक स्थित है। इसने महाद्वीप में घरेलू राजनीतिक चर्चा या प्रतियोगिता का भी विषय बना दिया है, अमेरिकी सैनिक द्वारा अपनाएँ जाने के तीन साल में देश का मूलभूत ढाँचा जैसे वित्त, प्रशासन व स्वास्थ्य और शिक्षा सभी पुनः बनाए गए। इससे इंकार नहीं किया जा सकता कि ये सब देश के हित में हैं। 1901 में अमेरिकी कांग्रेस ने क्यूबाई संविधान में प्रवेश करने के लिए पैलेट संशोधन शामिल किया। क्यूबा गणतांत्रिक राज्य बनने की अपेक्षा अमेरिका का संरक्षी देश बन गया क्योंकि अमेरिका को प्रादेशिक छूटें प्रदान करने के लिए संशोधन किया गया। इसमें क्यूबा सरकार पर वित्तीय बंधन लगाए गए तथा अमेरिका को क्यूबा के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने का अधिकार मिल गया। क्यूबा के विदेशी आर्थिक सम्बंध भी 1903 की पारस्परिक संधि होने के साथ बदल गए। इसके अनुसार अमेरिकी बाजार में क्यूबा की चीनी को महत्वपूर्ण दर्जा दिया गया और अमेरिका से क्यूबा को निर्यात में सीमा शुल्क कम किए गए। क्यूबा में अमेरिका का चीनी उद्योग, पशु उद्योग, सार्वजनिक सेवाओं, जनपयोगी सेवाओं और अन्य संपत्तियों में अमेरिकी निवेश 1909 तक 20 करोड़ डालर तक पहुँच गया जो क्यूबा में सकल विदेशी निवेश का लगभग 50 प्रतिशत है। पैलेट संशोधन और पारस्परिक संधि ने देश को चीनी के सार्वभौमिक व्यापार में न केवल केन्द्र बिन्दु अपितु इस क्षेत्र में अमेरिकी नेतृत्व का लक्ष्य भी बना दिया। यह संशोधन 1993 में ही रद्द किया गया। क्यूबाई राष्ट्रवाद, परास्त हुआ है लेकिन समाप्त नहीं हुआ है। उसने इन विकासों को महाद्वीप में अमरीकी हितों की रक्षा के लिए थोपे गए नए उपनिवेशवाद के रूप में अनुभव किया है। फीडल कास्त्रों के नेतृत्व में 1959 की क्रान्ति करना ऐतिहासिक निरंतरता एक ऐसा अगला तर्कसंगत कदम था जिसने उपनिवेश विरोधी राष्ट्रवाद को समाजवाद में पूरी तरह परिवर्तित कर दिया।

क्यूबा की बागवानी अर्थव्यवस्था की विशेषताओं पर पुनः चर्चा करते हुए कहा जाता है कि इसमें आरंभ से ही प्रकट रूप में आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताएँ थीं। एक थी इसकी अर्थव्यवस्था का शीघ्र ही बड़ी तेजी से बाजारीकरण होना। मैक्सिको एवं लैटिन अमेरिका से भिन्न महत्वपूर्ण क्षेत्र हमेशा छोटा था और विशेष रूप से सभी सामाजिक वर्ग बाजार अर्थव्यवस्था से जुड़े हुए थे। 1899 तक दो-तिहाई ग्रामीण श्रमिक बल चीनी और अन्य नकदी फसलों की खेती में लगा हुआ था। दूसरे बागवानी चीनी के लिए अन्तर्राष्ट्रीय माँग और अर्थव्यवस्था को आधुनिक बनाने के अन्तर्राष्ट्रीय निर्णय का उत्तर था। नवीनतम मशीनों और पिराई तकनीक का प्रयोग कर भूमि और श्रम के गहन दोहन पर आधारित विशिष्ट कृषि उत्पादन प्रणाली का विकास हुआ था। क्यूबा और शेष लैटिन अमेरिका से भिन्न यहाँ पर अर्ध सामंती हेसियांडों के पनपने और टिकने की कोई स्थिति नहीं थी। तीसरे, चीनी को महत्व देने से विदेशी पूंजी ने शीघ्र ही धनी ग्रामीण मध्य वर्ग को बाहर कर दिया तथा व्यापक उत्पादन, सामूहिक व्यवसाय और दूरस्थ स्वामित्व की स्थापना की। अमेरिकी संरक्षण ने

कृषि क्षेत्र को अत्यधिक धन के साथ जोड़ने का भी कार्य किया। अमेरिकी बैंकों की व्यापार और औद्योगिक निर्माण क्षेत्र में भी भूमिका रहती थी। चौथे, महाद्वीप का अधिकांश कृषि उत्पादन क्षेत्र एकाधिकार तर्ज पर संगठित था। उत्पादन प्रतिबंध, स्थिर मूल्य और अन्य एकाधिकारात्मक नियंत्रण ने चीनी, तम्बाकू, चावल, आलू और कॉफी की कृषि को दबा कर रखा हुआ था। अंतिम महत्वपूर्ण चीनी क्षेत्र में उद्योगपति, कृषक तथा श्रमिक सभी के शक्तिशाली संगठन थे। उत्पादन एवं मज़दूरी के मूल्य एवं चीनी की आमदनी का वितरण उद्योगपति या कृषक उत्पादक संघ या कभी-कभी राष्ट्रीय राजनीति के स्तर पर त्रिपक्षीय समझौते के द्वारा तय किया जाता था। चीनी, तम्बाकू और जनपयोगी सेवाओं में नियोक्ताओं तथा उत्पादकों का एकाधिकार एवं नियंत्रण था। जहाँ तक श्रमिक आन्दोलन का सम्बंध है श्रमिकों की संख्या के अनुसार क्यूबा की तुलना विश्व के बृहतम संघ से की जाती है। केन्द्रीय संघ अपने संबद्ध संगठनों पर असाधारण अधिकारों का प्रयोग करता है जो भ्रष्ट श्रमिक अभिजात वर्ग के अन्तर्गत उत्पादकता और न्यूनतम मज़दूरी सुनिश्चित करता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि हम आर्थिक परम्पराओं को उच्च आय वाले देशों के साथ जोड़ने के आदी हैं जो महाद्वीप बाजार व्यवस्था को आच्छादित करते हैं। इस बात पर जोर देना चाहिए कि क्यूबा के उत्पाद एवं श्रम बाजार की एकाधिकार परम्पराएँ बाजार अर्थव्यवस्था में छा गई। क्यूबा की परम्पराएँ पूंजीवादी थीं जो क्यूबा के लिए विशिष्ट रूप से ऐतिहासिक तथ्य स्वरूप में एकाधिकारवादी थी। इस कारण उन्होंने मिश्रित और वैज्ञानिक कृषि की व्यापक स्थापना को छोड़कर कृषि फसल उत्पादन एवं बंजर भूमि सुधार को निषेध कर एवं श्रमिक उत्पादन को सीमित कर क्यूबा के आर्थिक विकास की गति पर सीमाएँ लागू की। कुल मिलाकर उन्होंने घरेलू और विदेशी पूंजी की गतिशीलता एवं प्रभावी उपयोग के लिए अर्थव्यवस्था की योग्यता पर प्रतिबंध लगाए।

3.4.2 गुयाना और त्रिनिडाड

इसी चीनी उद्योग ने गुयाना, त्रिनिडाड और टोबागो सहित अन्य कैरिबियन महाद्वीपों में भी अफ्रीकी दासों को पहुँचा दिया। क्यूबा और पेरू के खजानों और अपने विस्तार सहित स्पेन को हथियाने के बाद कैरिबियन सागर अन्य सभी यूरोपीय ताकतों के लिए खुला मुक्त और आमंत्रित करने वाला लक्ष्य बन गया था अंग्रेजों ने 1679 में जमायका को बंद कर दिया तथा उन्नीसवीं शताब्दी के आंरभ तक गुयाना व त्रिनिडाड और टोबागो भी ब्रिटिश उपनिवेशी शासन में थे। गुयाना और त्रिनिडाड में चीनी की बागवानी क्यूबा या उत्तर-पूर्वी ब्राज़ील जितनी प्रतियोगी नहीं थी।

ब्रिटिश उपनिवेशों ने एकल उत्पादन अर्थव्यवस्था बनाई। चीनी के साथ शासन के ठिकाने, समाज और दासता सहित उपनिवेशी प्रशासन इस तरह बनाया गया था कि चीनी बागवानी दूरस्थ श्वेत स्वामियों के लिए लाभप्रद हो जिस प्रकार चीनी से यूरोपवासियों को मजा आ रहा था उसी प्रकार कैरिबियन में यूरोपीय उत्पादों की माँग से औद्योगिक क्रान्ति को बढ़ावा मिल रहा था। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक ब्रिटिश उपनिवेशों में उत्पन्न चीनी की क्यूबा, ब्राज़ील और दक्षिणी अमेरिका में उत्पन्न सस्ती चीनी से कड़ी प्रतियोगिता होती थी। क्यूबा और ब्राज़ील में चीनी उद्योग का यांत्रिकीकरण होने से गुयाना और त्रिनिडाड की चीनी महँगी पड़ रही थी। दासता को समाप्त किए जाने के कारण अफ्रीकी दासों के साथ निरंतर बागवानी करना अब लाभदायक नहीं रह गया था। चीनी उद्योग का आधुनिकीकरण करने और अर्थव्यवस्था में परिवर्तन करने के स्थान पर बागवानी वर्ग विश्व के विभिन्न भागों और मुख्यतः भारत से अनुबंधित श्रमिकों का आयात करता था। कैरिबियन ले जाए गए अनुबंधित भारतीय श्रमिक बड़ी उपनिवेशी योजना का हिस्सा बन गए जो उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में अनेक बागवानी उपनिवेशी क्षेत्रों में श्रमिक निर्यात में शामिल हो गए। 1834 और 1917 के बीच लगभग 12.5 लाख श्रमिकों को भारत से सुदूर दक्षिण प्रशान्त, अफ्रीका और कैरिबियन भेजे गए। गुयाना में 2,38,909 तथा त्रिनिडाड में 1,43,939 अनुबंधित भारतीय श्रमिक पहुँचे। जैमायका ने 36,412 श्रमिक आयात

किए जबकि सेंट लुसिया, सेट लिनसेंट ग्रैनांडा और सेंट किट्स ने लगभग 10,360 श्रमिक प्राप्त किए और सूरीनाम ने लगभग 34,304 भारतीय श्रमिक आए तथा ग्वाडेलूप, मार्टिनिक्यू और फ्रांसीसी गुयाना के उपनिवेशों में कई हजार भारतीय श्रमिक खप गए। 1834 और 1917 के बीच कैरिबियन में ब्रिटेन, डच और फ्रांसीसी आधिपत्य को मिलाकर वेस्ट इंडीज में कुल मिलाकर 5,19,438 अनुबंधित भारतीय श्रमिक पहुँचे।

पूर्वी भारतीय अनुबंधित श्रमिक सस्ते और बहुतायत में उपलब्ध थे। चीनी के मुक्त व्यापार युग में अप्रतियोगी बागवानी और उनके लाभों को बनाए रखना दूसरे तरीकों से बड़ा कठिन माना जाता था। भारत से अनुबंधित श्रमिक उष्णकटिबंधीय जलवायु में कार्य करने के लिए एकदम अनुकूल थे और चीनी कार्यों से अच्छी तरह परिचित होते थे। भारत से इनकी आपूर्ति भी परेशानी मुक्त थी क्योंकि ब्रिटिश कानून और पर्यवेक्षण के अंतर्गत बिना किसी बाहरी बाधा के एक ब्रिटिश उपनिवेश से दूसरे ब्रिटिश उपनिवेश में भेजना ब्रिटिश विषय था।

जैसा कि ऊपर वर्णन किया गया है गुयाना, जमायका, त्रिनिडाड और डच सूरीनाम की बड़ी बागवानी अर्थव्यवस्था में अधिकांश भारतीय अनुबंधित श्रमिक आए थे। वहाँ काफी बागान थे और कई तो छोड़ दिए गए थे; फिर रहने और कृषि के लिए काफी भूमि उपलब्ध थी, और भिन्न प्रकार की कृषि के लिए कुछ महत्वपूर्ण संभावनाएँ थी। यहाँ करीब 8 दशकों तक भारी संख्या में अनुबंधित भारतीय श्रमिक उपलब्ध रहे जब तक कि महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के विरोध द्वारा 1917 में इसे समाप्त नहीं कर दिया गया।

अनुबंध व्यवस्था भी दासता से भिन्न नहीं थी। यह दासता का संशोधित रूप था इसके साथ कई नियम जुड़े थे जैसे पाँच साल की बाध्यता, आवारा आदि वास्तव में दास प्रथा के बचे हुए नियम थे जो निरंतर जारी थे।

अनुबंध व्यवस्था को जारी रखने के लिए आर्थिक और गैर-आर्थिक दोनों प्रकार के नियंत्रण लगाए जाते थे। अनुबंधित आप्रवासियों को भारत छोड़ने से पूर्व एक अनुबंध पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़ते थे जिसमें अनुबंध के नियम एवं शर्तें होती थीं। अनुबंधित काल तक वे मुक्त नहीं रहते थे। अपनी नियुक्ति के दौरान वे किसी और जागीर में नहीं जा सकते थे। एक बार बागान में जाने के बाद वे अनुबंध समाप्त होने से पूर्व अपने नियोक्ता को छोड़ नहीं सकते थे, अधिक मज़दूरी की माँग नहीं कर सकते थे या अपने आंवटित कार्य करने सं इंकार नहीं कर सकते थे या बागानों को छोड़ नहीं सकते थे। एक बार अनुबंध पूरा हो जाने के बाद वैसे तो वे मुक्त हो जाते थे लेकिन उन्हें अपनी औद्योगिक आवास अवधि पूरी करनी पड़ती थी या वैकल्पिक रूप से पुनः अनुबंध करना पड़ता था। उनमें से अधिकतर के पास पुनः अनुबंध करने के अतिरिक्त कोई विकल्प नहीं बचता था। जो लोग गुयाना आवास अवधि पूरी कर भी लेते थे तो भी उन्हें वापिस जाने का मार्ग नहीं मिलता था। 1895 में एक नया नियम बनाया गया कि जो वापिस जाना चाहते हैं उन्हें वापसी किराये का एक चौथाई किराया देना होगा इसका आशय यह था कि बहुत लोग वापिस न जाने पाए। जो उपनिवेश में रहकर स्वतंत्र रूप से कार्य करना चाहते थे उन्हें एक विशेष शुल्क देना पड़ता था। उपनिवेश प्रशासन की भूमि नीति ने भी भारतीयों के लिए छोटा-सा भू-खंड भी खरीदना असंभव बना दिया था। केवल बड़े भू-खंड जो 100 एकड़ से कम न हो बेचे जा सकते थे जो किसी मुक्त श्रमिक के साधनों से खरीदना संभव नहीं था।

औपनिवेशिकों और बागान स्वामियों दोनों को भारतीय श्रमिकों को अनुबंधता के अधीन रखने में अपना स्वार्थ था। संपूर्ण व्यवस्था श्रमिकों को बागानों में एकांत में रखने तथा उन्हें स्थिर रखने के लिए बनाई गई थी। अनुबंधित भारतीय अपने बागान प्रबंधकों की लिखित अनुमति के बिना बागान नहीं छोड़ सकते थे। मुक्त भारतीयों को औद्योगिक आवास का प्रमाणपत्र हमेशा अपने साथ रखना होता था।

उन्हें पकड़ा जा सकता था और उनके दस्तावेजों की पुलिस, आप्रवासी विभाग के एजेंट या जिस बागान से गुजरते हैं उसके स्वामी या कर्मचारियों के द्वारा जाँच की जा सकती थी। किसी भी अनुबंधित श्रमिक को बिना लिखित अनुमति के राजमार्ग पर चलने के लिए आवारागर्दी के आरोप में या अवैध रूप से कार्य से अनुपस्थित रहने के आरोप में गिरफ्तार किया जा सकता था। तीन या उससे अधिक दिन तक कार्य से अनुपस्थित रहने को भागने जैसा गंभीर अपराध माना जाता था और उसे अधिकतम 2 मास की कैद की सजा होती थी। कैद की सजा के अन्य अपराध थे आंवटित कार्य करने से जानबूझकर मना करना या कार्यनिष्पादन में धोखा देना। जो भगौड़े आप्रवासी को या अनुबंधित भगौड़े को आश्रय देते हुए पकड़ा जाता तो सजा और भी कठोर होती थी। यह व्यवस्था चीनी बागान मालिकों की इच्छा से अधीनस्थ श्रमिकों के बड़े अतिरिक्त भंडार को हर हालत में बनाए रखने के लिए बनाई गई थी। और इसके लिए राजनीतिक/प्रशासनिक तथा आर्थिक उपाय किए गए थे।

यद्यपि अनुबंधित और मुक्त भारतीयों के साथ ऐसा व्यवहार किया जाता था, उपनिवेशों में और अधिक अनुबंधियों को लाना निरंतर जारी था। विश्व के मुक्त चीनी व्यापार में टिके रहने के लिए बागवानी अर्थव्यवस्था को कम लागत और कम मज़दूरी वाले श्रम आपूर्ति की निरंतर आवश्यकता रहती थी। वास्तव में जब कभी चीनी की अन्तर्राष्ट्रीय दर में कमी आती तो और अधिक अनुबंधित श्रमिकों का आयात किया जाता। यह निरंतर मज़दूरी को कम करने तथा श्रमिकों में रोज़गार के लिए प्रतियोगिता बनाए रखने का एक सरल तरीका था।

रोज़गार की कमी, कम मज़दूरी तथा भूमि अवधि व्यवस्था के संदर्भ में आर्थिक प्रतियोगिता ने अफ्रीकी और भारतीयों के बीच वर्ग भेद और मानव जातीय भेद के वैमनस्य की शुरुआत कर दी। यह भी महत्वपूर्ण है कि वर्ग भेद और मानव जातीय भेद के आधार पर बागवानी अर्थव्यवस्था ने सामाजिक वर्ग और व्यावसायिक समूह बना दिए। मुक्त दासों द्वारा स्थापित मुक्त गाँव को अनुबंधता में करीब करीब नष्ट कर दिया तथा अश्वेत लोगों को आर्थिक स्थिति वाले नगरों की ओर धकेल दिया गया। भारतीय अनुबंधित श्रमिक और उनके वारिस द्वीप में तथा चीनी बागानों में ही स्थिर रहे। समाप्त अनुबंध वाले मुक्त भारतीय भी अपने छोटे-छोटे कृषि भूखंडों और बागानों में मौसमी कार्यों में लिप्त रहे।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंत तक केला, कोक आदि नकदी फसलों और बॉक्साइट एवं पेट्रोलियम पदार्थों की खोज से कृषि का विस्थापन हो चुका था। खनिज उद्योग क्षेत्र द्वारा पहले के कृषि क्षेत्र से अधिक रोज़गार एवं मज़दूरी के अवसर उत्पन्न होने से दोनों वर्ग भेदी समूहों के बीच स्थित दूरियाँ और अधिक बढ़ गई तथा दोनों समुदाय शहरी-ग्रामीण विभाजन के अनुरूप बसने लगे। औपनिवेशिक प्रशासन की नीतियाँ भी स्पष्ट रूप से मानव जातीय रेखाओं में सामाजिक, वर्गों और समूहों की रचना के अनुकूल थे। ब्रिटिश गुयाना के बारे में लिखते हुए चेद्दी जगन लिखता है कि "उपनिवेशी काल में सामाजिक अनुक्रम रंग भेद के आधार पर था त्वचा का जितना अधिक श्वेत रंग होगा सामाजिक हैसियत भी उतनी ही ऊँची होगी। शीर्ष पर श्वेत बागान मालिक थे मध्य क्रम में अन्य वर्ण के आदमी थे। यद्यपि भारतीय भूरे रंग के थे लेकिन उन्हें सामाजिक क्रम में शामिल नहीं किया जाता था। उन्हें बाहरी समझा जाता था और कुली के रूप में मिश्रित श्वेत समाज द्वारा उनका तिरस्कार किया जाता था क्योंकि वे सांस्कृतिक और आर्थिक आधार से भिन्न सेवादार थे। वे प्रायः अनपढ़ थे और ईसाई पादरियों द्वारा धर्मान्तरण के प्रयत्नों के बावजूद वे हिन्दुत्व और इस्लाम से चिपके रहते थे।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि बागान समाजों की राजनीतिक अर्थव्यवस्था का तर्क और इच्छा जातीय विभाजनों को बढ़ावा देने और उन्हें शहरी-ग्रामीण तथा औद्योगिक कृषि विभाजनों में और पक्का करने की थी। बागान समाज क्रमानुसार था और भारतीयों को निम्नतम स्थिति प्रदान की गई थी जिनकी मिश्रित समाज के प्रभावी बोध में भी उसी के अनुरूप न्यून आर्थिक और कृषि क्षेत्र में

निम्नतम श्रमिक की स्थिति होती थी। इस प्रकार बागान समाजों ने ऐसे स्थिर विभाजन समाज बना दिए थे जहाँ व्यावसायिकता आवासीय और आर्थिक विभाजन पर मानव जातीय और वर्ग भेदों को पोषित किया जाता था। बीसवीं शताब्दी में जब श्रमिक संघों और राजनीतिक दलों का गठन हो रहा था तो उनमें भी इन समाजों के वर्ग भेद और मानव जातीय भेद नजर आ रहे थे। 1960 के दशक में प्रदत्त स्वतंत्रता ने अश्वेत और भारतीयों के बीच वर्ग भेद और मानव जातीय भेदों को और गहरा कर दिया।

3.5 साराश

मैक्सिको के मामले में औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय श्रमिकों की उपलब्धता ने अर्थव्यवस्था और समाज निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यद्यपि स्पेनी ताज ने स्वदेशी श्रमिकों को भूमि रखने के अधिकारों से वंचित करने का प्रयास किया लेकिन वह सफल नहीं हुआ। व्यापक भू-स्वामित्व का उदय हुआ जिसे हेसियांडा कहा जाता था जो उन्नीसवीं शताब्दी में वास्तविक रूप से बहुत महत्वपूर्ण बन गए थे।

हेसियांडा एक अर्ध सामंती संस्था थी और बागान अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति चीनी की बढ़ती अन्तर्राष्ट्रीय माँग के उत्तर में हुई। क्यूबा में चीनी बागान की प्रगति ने आधुनिक पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की उत्पत्ति में काफी योगदान दिया जिससे विदेशी निवेश सहित पर्याप्त निवेश एवं नई तकनीक को बढ़ावा मिला। यथा तथ्य इसी कारण से चीनी बागान अर्थव्यवस्था गुयाना और त्रिनिडाड में यह कार्य नहीं कर सकी। ऐसा होते हुए भी बागान अर्थव्यवस्था की प्रगति से दास प्रथा की उत्पत्ति हुई और कई कैरिबियन महाद्वीपों के मामलों में यह भारत से अनुबंधित श्रमिक व्यवस्था बनने के लिए भी उत्तरदायी है।

3.6 अभ्यास प्रश्न

1) हेसियांडा पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

2) उपनिवेशी शासन के दौरान मैक्सिको में भारतीय श्रमिकों के होने वाले व्यवहार पर चर्चा करें।

3) बागान अर्थव्यवस्था क्या है? क्यूबा में बागान अर्थव्यवस्था की मुख्य विशेषताओं की चर्चा कीजिए।

4) गुयाना और त्रिनिडाड में अनुबंधित श्रम व्यवस्था को स्पष्ट कीजिए।